ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

जल संरक्षण और महिला सशक्तिकरण

Water Conservation and Women Empowerment

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 28/11/2020, Date of Publication: 29/11/2020

अंशु गौड़
सहायक प्राध्यापक,
विधि विभाग,
सेज यूनिवर्सिटी
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

निशु सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग
गुरु घासीदास वि.वि.
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश

आज के समय में जल स्तर निरंतर नीचे जा रहा है जिसका मूल स्रोत वर्षा का जल है । केंद्रीय जल आयोग का अनुमान है की भारत की नदियों में प्रत्येक वर्ष औसतन लगभग 1869 बिलियन घन मीटर जल बह जाता है । भारत में कुल 12 नदियां ही ऐसी है जिनमे सालों भर पानी रहता है– गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र आदि। महिलाएं जल की प्रमुख उपयोग कर्ता होती है । वे खाना पकाने, कपडे धोने, परिवार की स्वछता सफाई के लिए जल प्रयोग करती है ।

In today's time, the water level is constantly being lowered, whose basic source is rain water. The Central Water Commission estimates that on an average about 1869 billion cubic meters of water flows into India's rivers every year. There are only 12 rivers in India which have water throughout the year - Ganga, Yamuna, Godavari, Krishna, Narmada, Brahmaputra etc. Women are the main users of water. They use water for cooking, washing clothes, cleaning the family cleanliness.

मुख्य शब्द : नदियां जल भू–जल महिलाएं जल संरक्षण जल प्रबंधन।
Rivers Water Ground Water Women Water Conservation Water Management.

प्रस्तावना

जल प्रबंधन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है । जितना भी संघर्ष जल को लेकर है करना हो महिलाओं को करना होता है कई रेगिस्तानी व पहाड़ी इलाके है जहाँ पानी लेने के लिए महिलाओं को मीलों व घंटों चलना होता है । ऐसे में महिलाओं का सशक्तिकरण एक कल्पना सी प्रतीत होती है ।

कहा जाता है जल ही जीवन है और जीवन देने की शक्ति ईश्वर ने महिलाओं को प्रदान की है, जल की आवश्यकता ने ही सभ्यताओं का केंद्र जल के आसपास बनाया । सिंधु सभ्यता इस बात का प्रमाण है।

आज के परिपेक्ष्य में हम बात करें तो जल ने अपना दामन समेट लिया है, जल स्तर निरंतर नीचे जा रहा है जिसका मूल स्रोत है वर्षा का जल।वर्षा का जल कई रूप में संग्रहीत होता है–नदी, तालाब, कुंए, समुद्र आदि।

धरातल पर बहने वाली जल की धारा नदी कहलाती है।नदियों की भूमिका हमारे जीवन में कितनी महत्वपूर्ण है यह सर्वविदित है।हमारे दैनिक जीवन से लेकर सामाजिक जीवन तथा आर्थिक जीवन में भी नदियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है इसका प्रवाह धरती पर जीवन निर्धारित करता है।अतः इनका संरक्षण जरुरी है।

केंद्रीय जल आयोग का अनुमान है की भारत की नदियों में प्रत्येक वर्ष औसतन लगभग 1869 बिलियन घन मीटर जल बह जाता है। कुल जल का 37–प्रतिशत प्रौद्योगिकी के अंतर्गत भारतीय जल संसाधनों का प्राकृतिक विवरण पर्याप्त असमान है।उत्तर में गंगा ब्रह्मपुत्र प्रणाली में 60–प्रतिशत क्षमता है वही पश्चिम घाटमें 11–प्रतिशत क्षमता। प्रायद्वीपीय क्षेत्र की महानदी, गोदावरी कृष्णा कावेरी व अन्य 19–प्रतिशत क्षमता उपलब्ध है।[1]

आज भारत की दो ही तस्वीरें दिखाई देती है जल के आधार पर–पहली प्रदूषित,

वलुप्तप्राय दम तोड़ती नदियाँ और दूसरी हमारे हाथों में नहीं आँखों में पानी।

भारत की मुख्य नदियों में 12 ही ऐसी है जिनमे सालों भर पानी रहता है–गंगा यमुना गोदावरी कृष्णा नर्मदा ब्रह्मपुत्र आदि।

अतीत से वर्तमान पर दृष्टि डालने पर हमें नदियों से सम्बंधित जल से सम्बंधित कुछ तथ्य सामने आते है–

1. विश्व की 10 बड़ी नदियों पर सूखने का खतरा मंडरा रहा है जिसमे भारत की गंगा व सिंधु भी है।
2. देश के शहरों में भू जल स्तर प्रतिवर्ष 10 फीट नीचे जा रहा है।
3. गुजरात के महसाणा व तमिलनाडु के कोयंबटूर जिलों ने अपनी भू–जल संपदा हमेशा के लिए खो दी है।
4. विश्व के 1.4 अरब लोगो को पीने का शुद्ध पानी नहीं मिल रहा।
5. भारतीय नारी पीने के पानी के लिए रोज ही औसतन मील पैदल चलती है।[2]

महिलाएँ जल की प्रमुख उपयोग कर्ता होती है। वे खाना पकाने, धोने, परिवार की स्वच्छता सफाई के लिए जल प्रयोग करती है। जल प्रबंधन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

बुन्देलखंड की महिलाओ ने जल सहेलियां बनकर अपने श्रम से पुराने जल स्रोतों को पुनर्जीवित कर दिया है और बर्बाद होते पानी को उपयोगी बना दिया गोहनीगांव में सावित्री, कुरौती गांव में अनुजादेवी, कलोथरा गांव में रामवती आदि।[3]

कुछ ऐसे कार्यकर्ताओं का नाम हमें मिलता है जिन्होंने राहत के कार्य किये, सूखे स्थानों को पानीदार बनाने का सफल प्रयास किया। लद्दाख के वर्षाविहीन हिमालयी रेगिस्तान में जहाँ लोग एक –एक बूंद पानी को तरसते है, लेह के सेवा निवृत सिविल इंजीनियर ''चेवांग नोर्फेल'' अनोखे कृत्रिम ग्लेशियर बनाकर इस इलाके को सिंचाई की समस्या से मुक्त किया। ये ग्लेशियर घरों से बहकर बर्बाद होने वाले पानी के सहारे बने है । इसे बनाने 1 लाख की लगत आती है ।

वर्तमान समय में हमें मेघा पाटकर, चित्तरूपा पालित आदि का नाम मिलता है । जो जलसत्याग्रह की प्रेरणा है। नर्मदा बचाओ आंदोलन इनके नेतृत्व में संचालित है।

संयुक्तराष्ट्र के अनुमानों के अनुसार 2025 तक लगभग 5.5 अरब लोग यानि दुनिया के 1/3 जनता को पानी नहीं मिलेगा।[4]

अतः आज के वर्तमान समय में विश्व, राष्ट्र, राज्य व् गांव स्तर पर महिलाएं भी जल संरक्षण में भूमिका निभा रही है। राष्ट्रीय स्तर पर हमें गंगा नदी को लेकर उमा भारती का कार्य, नर्मदा नदी को लेकर मेघा पाटकर का नाम मिलता है। महाराष्ट्र के रायगढ़ में उल्का महाजन का कार्य उल्लेखनी है।

हमारे विकासशील देश में जल लाने का कार्य केवल महिलाओ को करना होता है। ऐसी कई रेगिस्तानी व पहाड़ी इलाके है जहाँ पानी लेने के लिए महिलाओं को मीलों चलना पड़ता है।

इतिहास में वेदों व पुराणों में हमें जल पूजा व जल संरक्षण के प्रमाण मिलते है।

वैदिक युग में सूर्य को जल चढ़ाते हुए प्रार्थना की जाती थी की–''हे सूर्य भगवान मैं आभारी हूँ कि मुझ पर ऊर्जा, हवा और पानी की कृपा हुई। मैं तीनों का आदर करता हूँ।''[5] यह सब इसलिए था ताकि हम जल संपदा हमेशा सुरक्षित रखें ।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह बताना है की महिलाओं और जल का गहरा सम्बन्ध है। जल से ही महिलाएं दैनिक जीवन के प्रत्येक कार्य को करती है उसके आभाव में उनको ही मीलों का सफर तय करना पड़ता है। संभवतः इस लिए ही महिलाओं ने जल संरक्षण के लिए कदम उठाये इसी संबंद्ध को उजागर करना अध्यन का उद्देश्य है ।

निष्कर्ष

यदि हमें भूजल स्तर बढ़ाना है तो पारंपरिक जल संरक्षण के तरीकों को पुनर्जीवित करना होगा और आधुनिक जल संरक्षण के तरीकों को अपनाना होगा। जिसमे महिलाओं की विशेष भागीदारी आवश्यक है, क्यूंकि पानी के आभाव में सबसे अधिक संघर्ष पूर्ण जीवन महिलाओं का ही होता है, यदि जल आपूर्ति सभी क्षेत्रो में सामान और भरपूर मात्रा में हो तो महिलाएं अपनी संपूर्ण ऊर्जा परिवार समाज और देश के विकास में लगा सकती हैं। और अपने विकास के साथ–साथ परिवार और समाज साथ ही देश का विकास कर सकती हैं। जल की समस्या एक ऐसी समस्या है जिससे मानव ही नहीं जीव जंतु, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे सभी प्रभावित हैं। कोई भी इसके बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकता और ना ही महिलाओं के सशक्तिकरण की ही कल्पना की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ तिवारी विजय कुमार –पर्यावरण अध्ययन, हिमालया पब्लिशिंग हाउस मुंबई 2004*
2. *सिन्हा अंशु पूर्व आधुनिक काल में छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदियों का सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक महत्व : एक ऐतिहासिक अनुशीलन पंडित रविशंकर शुक्ल यूनिवर्सिटी रायपुर, 2010, पृ. स. 192*
3. *hindi.oneindia.com*
4. *hindi-indiawaterportal.org*
5. *सिन्हा अंशु पूर्व आधुनिक काल में छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदियों का सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक महत्व : एक ऐतिहासिक अनुशीलन, पंडित रविशंकर शुक्ल यूनिवर्सिटी रायपुर, 2010, पृ. स. 190*
6. *त्रिपाठी मधुसूदन–जल प्रदुषण समस्या और समाधान, ओमेगा पब्लिकेशन 2006*
7. *मणिवासकाम एन–हवा और पानी में जहर, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1998*
8. *नेमा अवधेश कुमार–भूजल चिकित्सा पद्धति, कृषक जगत प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)*